पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
दिलीप सोमेश्वर

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका **-दिलीप सोमेश्वर**

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

“हिन्दी को हृदय में उतारना ही होगा”

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: "हिन्दी को हृदय में उतारना ही होगा"

पिछले दिनों एक टेलीविजन कार्यक्रम में पत्रकार ने विद्यार्थियों, युवाओं, अधिकारीयों व जनप्रतिनिधियों से हिन्दी के बारे में अनेक प्रश्न पूछे। अधिकांश ने अपना उत्तर अंग्रेजी में दिया, 'आइ लव हिन्दीहार्टली।' कुछ को हिन्दी की बारहखड़ी याद नहीं थी तो कुछ हिन्दी दिवस के बारे में नहीं बता पाए। अधिकतर को तो राष्ट्र गान तक याद नहीं था। कार्यक्रम देख सहसा मन उद्वेलित हो उठा। आखिर अपने ही देश में हिन्दी की अवहेलना क्यों ? क्या अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिलने के बाद भी अंग्रेजियत हावी है या मज़बूरी ? "हिन्दीहिन्द महासागर की बेटी, फिर क्यों अंगारों से जलती ?"दिल से हिन्दी को चाहने का दम भरने वालो के दिमाग में अंग्रेजी डेरा डाले हुए है।

आजादी के बाद देश ने अपना संविधान बनाया। एक राष्ट्र ध्वज –गान –गीत से राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाई मगर देश आज़ादी के बहत्तर वर्षों बाद भी अपनी राष्ट्र भाषा तय नही कर पाया। संविधान में अनेक मुद्दों को लेकर संशोधन हुए पर राष्ट्र भाषा पर आज भी प्रश्न अनुत्तरित है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में हिन्दी को सरकारी काम-काज हेतु 'राजभाषा' के रूप में मान्यता मिली। 14सितम्बर 1949 को इस प्रस्ताव को स्वीकार किया गया और तब से प्रतिवर्ष इस दिन को "हिन्दी दिवस " के रूप में मनाया जाता है।

यह हमारे लिए गौरव की बात हो सकती है कि हिन्दी विश्व की तीसरी और भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसे लगभग पचास करोड़ लोग बोलते हैं। परन्तु आबादी की अपेक्षा यह आंकड़ा आधे से भी कम है। हिन्दी की विकास यात्रा एक युग गाथा है। भारत में अनेक बोलियाँ हैं। बोलियों से ही भाषा का विकास होता है। जब बोलीं साहित्यिक रूप लेती है तभी भाषा बनती है। हिन्दी में पांच उपभाषाएँ व अठारह बोलियां समावेशित हैं। सदियों तक पराधीन रहने के कारण अनेक विदेशी भाषाओँ के शब्द हिन्दी में मिल गए। अंग्रेजी,अरबी,तुर्की,फ्रेंच,यूनानी, चीनी, पुर्तगाली आदि भाषाओँ के शब्द हिन्दी में घुल –मिल गए। अखबार,चाय, नमक, अचार,चाकू, चाबी, इन्सान, दुनिया,हॉस्पिटल ,स्टेशन आदि अनेक शब्दों का उपयोग हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा बन चुके हैं। यही हिन्दी की

विशालता और उदारता है और देश की अनेकता में एकता की ताकत । भाषा बहते पानी की तरह है और हिन्दी ने इस प्रवाह की निरंतरता और निर्मलता को बनाये रखा है ।

इतनी बोलियों को अपने अन्दर समेटे हिन्दी की सर्वमान्यता का प्रश्न आता है तब मन मसोस कर रह जाता है । जब जब राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित करने की बात होती है विरोध के स्वर उठने लगते हैं । आजादी के बाद कई बार हिन्दी विरोधी आन्दोलन देश के विभिन्न राज्यों में हुए ।प. बंगाल और दक्षिणी राज्यों में विरोध के स्वर मुखरित हुए । मद्रास प्रान्त का बटवारा तो भाषा के नाम पर तीन राज्यों में हो गया । आज भी हमारे देश के नेताओं को इन राज्यों में अपनी बात जनता तक पहुँचाने में प्रांतीय भाषा के अनुवादकों की जरुरत पड़ती है । राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था 'राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है , मेरे लिए हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है।सुभाष चन्द्र बोस ने हिन्दी के विरोध के किसी भी आन्दोलन को राष्ट्र की प्रगति में बाधक बताया था । जहाँ कवि भारतेंदु ने "निज भाषा उन्नति अहै,सब उन्नति को मूल' कहा वहीँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा 'भारत ही हमारी राष्ट्रभूमि हरी भरी, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी' । अवनींद्र विद्यालंकार ने तो राष्ट्रभाषा के बिना आजादी को बेकार बताया था । पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटलबिहारी वाजपेयी तो पहले नेता थे जिन्होनें संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपना भाषण हिन्दी में दिया । पहली बार विदेशी मंच पर हिन्दी की गूंज सुनाई दी ।अनेक आर्थिक और राजनैतिक कारणों से विश्व के देशों से विकास और व्यापार के लिए विदेशी भाषा का उपयोग करना पड़ता है । परन्तु दुनिया के अनेक राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष अपने साथ अनुवादक ले के आते हैं और अपनी बात अपनी राष्ट्रभाषा में रखते हैं । क्या हमारे नेता उनसे प्रेरणा नहीं ले सकते हैं ?

आवश्यकता है आज के वैज्ञानिक व कंप्यूटर युग में हिन्दी को सुदृढ़ बनाने की ।तकनीकी क्षेत्रों में आज भी हिंदी शब्द कोष को विकसित करने की जरूरत है। देश के हर व्यक्ति को हिन्दी को दिल से अपनाना होगा। माता-पिता को 'मोम – डेड' कहने व 'आइ लव हिन्दी वैरी मच' वाली विचारधारा को त्यागने की । एक विदेशी शब्द 'अंकल' ने अनेक रिश्तों के एहसास को ख़त्म कर रख दिया । अपनी भाषा में अपनेपन की मिठास होती है।गंगा – जमनी संस्कृति को हिन्दी ने पूरी उदारता से सींचा है । परन्तु हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मानीय स्थान देने की बात आते ही उसे मजहब और प्रांतीयता के संकीर्ण दायरों में जकड़ने की कोशिशें शुरु हो जाती हैं ।

यद्यपि इसके लिए समय समय पर सरकारों द्वारा प्रयास जारी है। हिन्दी कवि सम्मेलनों के माध्यम व शिक्षा में हिन्दी को बढ़ावा देने से हिन्दी की लोकप्रियता बढती जा रही है परन्तु सच्चे अर्थों में हिन्दी को वह मुकाम तभी हासिल होगा जब हम दिल में हिंदुस्तान बताने के साथ दिमाग में भी हमारी हिन्दी को अंग्रेजी से ऊपर दर्जा दें।

-दिलीप सोमेश्वर
बांसवाड़ा

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**दिलीप सोमेश्वर**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...